कला जगत

डा. अर्चना पाठक

कई कलाकार प्रशिक्षित किए प. हरिशंकर

प. हरिशंकर शर्मा कंकाली पारा रायपुर के निवासी प्रसिद्द हरिकीर्तनकार, कथा वाचक और कंकाली पारा के पुजारी मनराखन उपाध्याय के तृतीय पुत्र थे। आपका जन्म सन 1905 ई को रायपुर में हुआ था। आपने माधवराव सप्रे हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। नागरीदास मंदिर और दूधाधारी मठ रायपुर में प. मनराखन के हरिकीर्तन का आयोजन होता था। इसी कार्यक्रम में हरिशंकर शर्मा महंत पुरुषोत्तम दास के संपर्क में आए। महंत जी संगीत के विद्वान थे, उन्होंने हरि शंकर का रुझान देखकर उन्हें भृगुनाथ संगीतालय भेजा, जहां हरि शंकर ने ध्रुवपद, धमार शास्त्रीय गायन की क्रमबद्ध शिक्षा प्राप्त की। कालान्तर में आप राजा वायल के दरबारी संगीतज्ञ बन गए। मनराखन शर्मा ने अपने पुत्र को रायपुर वापस बुला लिया। हरि शंकर ने यहां संगीतबद्ध हरिकीर्तन एवं श्रीमद भागवत कथा का वाचन प्रारम्भ किया। आपके साथ हारमोनियम पर नानाजी देशपांडे, पुंडरीक देशपांडे, रामदास महाराज, गुंजनलाल सोनी, और पन्नालाल अवधिया प्रमुख रूप से संगत करते थे। तबले पर रामन्ना बाबू, रामलाल सोनी, रामव्यास विश्वकर्मा आदि संगत करते थे। आपकी संगत गोष्ठी में नानाजी कुशतर्पण, कन्हैयालाल भट्ट, फगुआराम सोनी शामिल होते थे। इसके साथ बड़े नामों में भगवतीशरण झा बांसुरी वादन, रामकिशन पोद्दार हारमोनियम वादन, संतोष टांक बांसुरी वादन, मदन चौहान, मालती केलकर, दीपक बेडेकर शामिल रहते थे।

सुरता

आचार्य सरयूकांत झा

समाजसेवी के रूप में जाने गए योगानन्दम

योगानन्दम जी छत्तीसगढ़ के राजा महाराजाओं के प्रसिद्ध वकील थे। उन्होंने इंदौर कॉलेज से प्रतिभाशाली छात्र के रूप में एम ए दर्शन शास्त्र उत्तीर्ण किया था। बाद में विधि महाविद्यालय से वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आपके बड़े भाई जी जनस्वामी म. प्र. शासन के उच्च अधिकारी थे। उन्होंने भी उनके साथ रहकर वकालत शुरू कर दी। आपने उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने में कोई कमी नहीं की। जन जन से धन राशि कर कॉलेज खोलने के संकल्प को पूर्ण किए। आज इसे हम छत्तीसगढ़ कालेज के रूप में देख रहे हैं यह वही कॉलेज है जिसकी चर्चा यहां हो रही है। इस कॉलेज को खोलने में मुख्य रूप से श्रीशंकर झा, दाऊ कामता प्रसाद अग्रवाल का प्रमुख योगदान रहा। यहां प्रोफेसर विद्यार्थियों को भारतीय वेशभूषा में शिक्षा देने आते थे। एक खास बात यह रही कि आजादी की लड़ाई में इस कॉलेज के छात्रों की भी अहम भूमिका रही। 1942 के क्विट इंडिया आंदोलन में कॉलेज के छात्रों ने भाग लिया। राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण 15 वर्षों तक कोई शासकीय सहायता नहीं दी गई। इस समय भी कॉलेज अपने बलबूते पर और जनता की सहायता से चलता रहा। योगानंदम ने छत्तीसगढ़ कालेज के रूप में एक आदर्श संस्था का निर्माण किया। यह गौरवपूर्ण संस्था आज भी अपने निराले आन बान के साथ परिचालित है। अब इसका अपना सुंदर भवन बन गया है। कॉलेज का शासकीयकरण हो चुका है। पूरे छत्तीसगढ़ में इस महाविद्यालय के पूर्व छात्र राष्ट्रीय संस्था के ध्वजवाहक के रूप में मातृ संस्था का स्मरण करते हैं।

परम्परा

डा. पीसी लाल यादव

गिनने के लिए उपयोग होता रहा है बिस्कुटक

छत्तीसगढ़ी बिस्कुटक एक मन गणित है , मनोरंजन और ज्ञानवर्धन का साधन। यह बिस्कुटक आज भी लोक मन में सैकड़ों की संख्या में हैं पर इसकी परम्परा और व्यवहारिकता लगभग लुप्त प्राय है। बिस+कूट+क यहां पर बिस का आशय संख्या बीस से है और कूट अर्थात पहेली। क माने करना। अर्थात बीस संख्या से संबंधित पहेली करना। छत्तीसगढ़ी में कुटका का अर्थ टुकड़ा भी होता है। इन दोनों ही अर्थों में बिस्कुटक का अभिप्राय अपरिवर्तनीय है। इस शब्द में गणना बीस तक ही होती है। पंक्तियां अर्थ मूलक हैं, हल मूलक नहीं। एक उदाहरण -

आठ एठेनी बारा बेनी,
चार चुहक्का दू पुरेनी।

बिस्कुटक छत्तीसगढ़ी लोक जीवन में परिव्याप्त है और वाचिक परम्परा द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होकर लोक मानस में प्रचलित है। आज आवश्यकता है इसके संरक्षण और संवर्धन की। यह हमारी लोक साहित्य और संस्कृति की अमूल्य निधि है। इनमें लोक संस्कृति का दिग्दर्शन है। यह लोक बोध और लोक संस्कार के पर्याय हैं। बिस्कुटक तत्कालीन लोक समाज की सामाजिकता और आर्थिक महत्व को प्रकट करने वाला लोक का आगार है।

अक्ति (अक्षय तृतीया) का त्यौहार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष में तीसरे दिन मनाया जाता है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल में यह त्यौहार कृषकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है । छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल में मुख्यतः व्यवसाय कृषि है, और इस त्यौहार के माध्यम से कृषि उत्पादन व बारिश का अनुमान किसानों द्वारा परंपरागत तरीके से लगाया जाता है। जो कि लोकमानस में प्रचलित है ।इसलिए ग्रामीण अंचल के लोग अक्ति (अक्षय तृतीया) को प्रचलित नियमों के अनुसार ही मनाते हैं।

अक्ति त्योहार से किसान आगामी बारिश का लगाते है अनुमान

इस त्यौहार में गोबर से कोठी बनाकर पूजा की जाती है। कोठी बनाने की प्रथा का विशेष महत्व है। अक्ति (अक्षय तृतीया)का त्योहार कृषक वर्ग के लिए महत्वपूर्ण पारंपरिक त्यौहार है। जिससे जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य होते हैं, जिसके आधार पर बारिश का अनुमान व कृषि उत्पादन की क्षमता का आकलन किया जाता है। इस दिन धान या चावल के आटे से आंगन में चौक बनाया जाता है। उसके ऊपर गोबर से सात गोलाकार गड्ढा(कोठी) बनाया जाता है। गौरी -गणेश व कलश स्थापित कर लक्ष्मी माता व विष्णु जी का पूजन किया जाता है। सुबह स्नान करने के पश्चात कोठी बनाकर चार कोठी में पानी और तीन कोठी में धान भरकर पूजा किया जाता है। प्रसाद स्वरूप नारियल, भीगा हुआ चनादाल ,बड़ा, बोबरा, खीर, पुरी आदि चढ़ाया जाता है। चार कोठी जिसमें पानी भरा जाता है वो चार महीने क्रमशः असाढ, सावन ,भादो औरअश्विन का सूचक होता है। तीन कोठी में धान भरा जाता है। सूर्यास्त के समय प्रत्येक कोठी में शेष बचे पानी के आधार पर हर महीने में कितना बारिश इस वर्ष होगा उसका अनुमान लगाया जाता है। साथ ही यह भी अनुमान लगाया जाता है यदि किसी कोठी में से पानी बहकर बाहर निकल गया हो तो, उस महीने में मूसलाधार बारिश होगी। जिस कोठी में कम पानी है उस महीने में कम पानी का अनुमान लगाया जाता है। इस प्रकार कोठियां में बचे हुए शेष पानी के आधार पर उस महीने में कितनी बारिश होगी इसका अनुमान लगाया जाता है। सूर्यास्त के बाद कोठी को उठा लिया जाता है। धान भरे कोठी के धान को रौताईन को उपहार स्वरूप दिया जाता है। गोबर के कुछ हिस्से में धान चिपका होता है, उसे छप्पर में रख दिया जाता है। बारिश पश्चात उसमें होने वाले अंकुरण को देखकर के आने वाली फसल उत्पादन का अनुमान लगाते हैं। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल में यह परंपरा लोकमानस में सदियों से चली आ रही है और इसी के अनुसार किसान आगामी बारिश व फसल का अनुमान लगाते हैं। अक्षय तृतीया में सूर्य व चंद्रमा की स्थिति उच्च होती है । अतः इस दिन का विशेष महत्व है। इस दिन गुड्डे- गुड़ियों का विवाह गांव में खेला जाता है। ग्रामीण अंचल में अक्षय तृतीया का त्योहार परंपरागत तरीके से मनाया जाता रहा है।

परब विशेष : डा.श्रीमती ज्योति किरण चंद्राकर

ऐतिहासिक : डा. गणेश खरे

अनेक साक्ष्य समाहित हैं सुरंग टीला मंदिर में

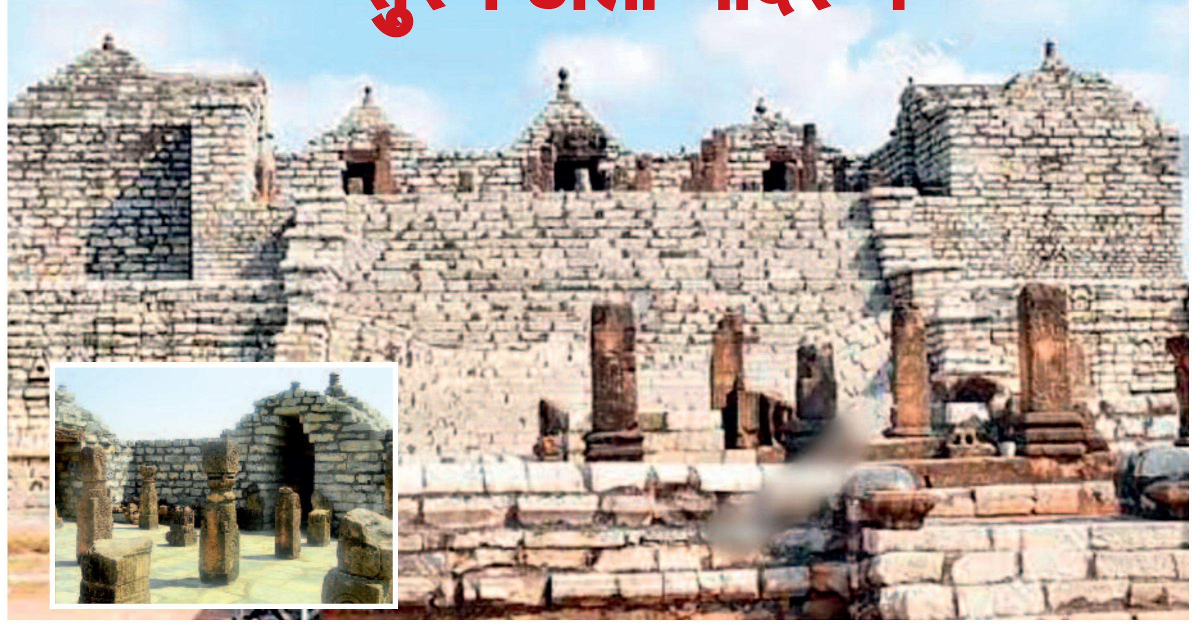

महानदी के तट पर सिरपुर अंचल में गंधेश्वर मंदिर के पूर्व में शिवजी का एक विशाल मंदिर मिला है इसे सुरंग टीला मंदिर नाम दिया गया है। यह पंचायचन शैली का शिव मंदिर है जो 4.65 मीटर ऊंचे अधिष्ठान पर निर्मित है। इस संरचना के ऊपर पांच मंदिर है जिनमें से चार में शिव की प्रतिमाएं हैं और पांचवें में गणेशजी की प्रतिमा है। इन मंदिरों के सामने 32 स्तंभों का एक विशाल मंडप है। इस मंदिर के पश्चिम में 43 सीढ़ियां हैं। एक स्तंभ में मंदिर का प्रारूप भी उत्कीर्ण किया गया है। यह मंदिर 12वीं शताब्दी में भूकंप आने से ध्वस्त हो गया था। मंदिर के दो परकोटे हैं। भीतरी परकोटा पर ईंटों से तथा बाहरी प्रस्तर से बना है। भीतरी परकोटा में यात्रियों के रुकने की भी व्यवस्था की गई थी। इन दोनों परकोटों के बीच में सभा मंडप भी है तथा मंदिर के दक्षिण पश्चिम में एक तांत्रिक मंदिर भी है। इनमें तीन गर्भ गृह श्वेत हैं तथा यहां ब्रह्मा, विष्णु और महेश की प्रतिमाएं हैं। शिवलिंग श्वेत हैं तथा उसका योनि पीठ सोलह कोणीय है। इन सभी मंदिरों का निर्माण बालार्जुन ने सातवीं शताब्दी में कराया था। इस मंदिर के तोरण के पास से होकर 30 फुट चौड़ी सड़क है जो शहर के मध्य से होती हुई महानदी के तट तक जाती है। इस सड़क के दोनों ओर पूजा अर्चना की सामग्रियों की छोटी छोटी दुकानें भी हैं। पुरातत्वविदों का कहना है कि सड़क के अवशेष ईसा पूर्व दूसरी तीसरी शताब्दी के हैं जो इस बात के प्रतीक हैं कि यह नगर प्राचीन काल से ही समृद्ध और व्यापार का बहुत बड़ा केंद्र रहा है। यहां खुदाई में महानदी के तट पर एक बंदरगाह भी मिला है जो इस बात का साक्ष्य है कि उस समय जल मार्ग से उड़ीसा तक तथा उसके बाद समुद्री जहाजों से विदेशों से भी व्यापार होता था।

लोक साहित्य

सरला शर्मा

नई दिखे छत्तीसगढ़ी में चम्पू काव्य

जन जीवन संग जुरे कथा कहानी वाचिक परम्परा अनुसार मंचस्थ होवत आवत जइसे लोरिक चंदा भरथरी आय। इन सब में प्रस्तुत करइया गद्य अऊ पद्य दूनो के उपयोग कथा क्रम ल आघु बढ़ाय बर करथे। तभो ए तरह के मंचीय प्रस्तुति ल निमगा चम्पू काव्य नी कहे जा सके। सवाल उठथे कि आज के दिन में छत्तीसगढ़ी गद्य विधा में महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पू काव्य के संख्या बढ़त काबर नई हे? दूसर बात ये कि आजकल तो पढ़े लिखे मन के गिनती बढ़त जात हे, तभो माने बर तो परही के मनखे के जिनगी मशीन होगे हे। अतेक बड़े रचना मन ल पढ़े बर बेरा, सुजोग के कमी तो होगे हे। साहित्य के भंडार भरे बर महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पू काव्य के रचना जरूरी हे। सबले जरूरी बात के अब बेरा बदल गे हे, जेकर महत्ता दिखत हे। साहित्यकार के संख्या में बढ़ोतरी

के रूप में एकर फायदा अउ जादा मिले के उम्मीद चम्पू काव्य रचना में देखे बर मिल सकत हे। बड़ गरब गुमान के बात आय के आजकाल चम्पू काव्य पढ़े बर मिलबेच करही।

छत्तीसगढ़ी पद्य साहित्य में आज लिखे महाकाव्य, खंडकाव्य अउ चम्पू काव्य म वर्तमान ह जगा पाही। आज के सामाजिक जीवन, शिक्षा, धर्म, राजनीति, विज्ञान, संस्कृति हर जगर, मगर करत इतिहास के नवा अध्याय बनही, कहे जा सकत हे के भविष्य के थाती लिखाही।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

केंवटिन देऊल : महानदी घाटी की सभ्यता का साक्षी

गांव की कहानी

स्वराज करुण

महानदी घाटी की सभ्यता अपने अनेक प्राचीन मंदिरों , पुरातात्विक स्मारकों और पुरावशेषों के लिए देश और दुनिया में प्रसिद्ध है। इस नदी घाटी सभ्यता का विस्तार छत्तीसगढ़ के सिहावा पर्वतीय अंचल से ओड़िशा में जगन्नाथपुरी के पास बंगाल की खाड़ी तक है। इनके अलावा महानदी के आस -पास कई ऐसे भी प्राचीन मंदिर और पुरातात्विक स्मारक हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर अधिक चर्चित नहीं हैं।

इन्हीं में छत्तीसगढ़ के ग्राम पंचधार और पुजेरी पाली (पुजारी पाली) के बीच स्थित छठवीं -सातवीं शताब्दी का शिव मंदिर भी शामिल है ,जो केंवटिन देऊल के नाम से जाना जाता है।यह भी महानदी घाटी की सभ्यता का साक्षी है। इतिहासकार इसे छठवीं -सातवीं शताब्दी का गुप्तकालीन मंदिर मानते हैं। यहाँ स्वयंभू शिव विराजमान हैं। यह स्थान इतिहास में शशिपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। पंचधार और पुजेरीपाली परस्पर लगे हुए गाँव हैं जो रायगढ़ जिले में बरमकेला विकासखंड के अंतर्गत सरिया कस्बे के पास स्थित हैं। पुजेरी पाली में एक प्राचीन विष्णु देवालय के भग्नावशेष भी हैं। यह देवालय भी छठवीं -सातवीं सदी का माना जाता है। केंवटिन देऊल (देवालय) के बारे में इस अंचल में प्रचलित जनश्रुतियों के अनुसार जब दुनिया में छह महीने की रात हुआ करती थी, उस युग में स्वयं भगवान विश्वकर्मा ने इसका निर्माण किया था। एक जनश्रुति यह भी है कि भगवान विश्वकर्मा जब इसे बना रहे थे , तभी उस रात के अंतिम पहर में केंवटिन ढेंकी में धान कूटने लगी। चूंकि रात बीती नहीं थी और ढेंकी की आवाज से भगवान का ध्यान भंग हो गया तो उन्होंने इसके गुम्बद को अधूरा छोड़ दिया। आज से करीब तीस साल पहले तक यह

मंदिर अपने बेहतर रख -रखाव की बाट जोह रहा था। बाद के वर्षों में ग्रामीणों ने जन -सहयोग से इसका जीर्णोद्धार किया। ग्रामीणों ने कोशिश की है कि करीब 1300 या 1400 साल पहले लाल ईंटों से निर्मित यह मंदिर अपने मूल स्वरूप में दिखाई दे। इसीलिए इसका रंग -रोगन भी उसी के अनुरूप किया गया है। मंदिर में नियमित पूजा -पाठ के साथ मुहूर्त देखकर धार्मिक रीति -रिवाज के अनुसार सादगीपूर्ण ढंग से विवाह समारोह भी आयोजित किए जाते है।

इसके लिए मंदिर परिसर में एक विवाह मंडप भी बनवाया गया है। अभिमन्यु गिरि इस मंदिर के मुख्य पुजारी यह उनकी सातवीं पीढ़ी है।केंवटिन देऊल में हर साल महाशिवरात्रि का महापर्व भी उत्साह के साथ मनाया जाता है। पंचधार में केंवटिन देऊल के सामने एक विशाल पीपल के पीछे एक विशाल बरगद भी है। गर्मियों में बरगद की घनी छाया श्रद्धालुओं को शीतलता प्रदान करती है। मंदिर परिसर में एक ऐसा कुंआ है, जिसका पानी कभी नहीं सूखता। गर्मी के दिनों में भी यह कुंआ लबालब रहता है। केंवटिन देऊल के मुख्य पुजारी के अनुसार पंचधार और पुजेरी पाली की धरती में अनेक पुरातात्विक अवशेष आज भी बिखरे हुए हैं ,जिनके उचित सरंक्षण की आवश्यकता है। ग्रामीणों ने पंचायत के सहयोग से यहां पर एक संग्रहालय बनवाया है ,जहां कई पुरावशेषों को व्यवस्थित ढंग से रखा गया है, उनमें से दो मूर्तियों की पूजा भी हो रही है। संग्रहालय और विष्णु देवालय के सामने भी कई टूटी -फूटी प्राचीन प्रतिमाएं चिन्ताजनक हालत में बिखरी पड़ी हैं।